

Signature and Name of Invigilator

Roll No.

--	--	--	--	--	--	--	--

(In figures as per admission card)

1. (Signature) _____
(Name) _____

2. (Signature) _____
(Name) _____

Roll No. _____
(In words)

Test Booklet No.

D-2505

**PAPER – III
SANSKRIT**

[Maximum Marks : 200

Time : 2½ hours]

Number of Pages in this Booklet : 40

Number of Questions in this Booklet : 26

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answers to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.
No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
 - (i) To have access to the Test Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
 - (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the question booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the Test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc. is prohibited.**
10. **There is NO negative marking.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुये रिक्त स्थान पर ही लिखिये।
इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी। पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
 - (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी सील को फाड़ लें। खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें।
 - (ii) कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं। दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात् किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें। इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे। उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा।
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें।
8. केवल नीले / काले बाल प्वाइंट पेन का ही इस्तेमाल करें।
9. किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है।
10. गलत उत्तर के लिए अंक नहीं काटे जायेंगे।

SANSKRIT

संस्कृत

PAPER – III

प्रश्नपत्रम् - III

NOTE: This paper is of two hundred (200) marks containing four (4) sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

सूचना :- अस्य प्रश्नपत्रस्य द्विशतम् (200) अङ्काः सन्ति। प्रश्नपत्रमिदं चतुर्षु खण्डेषु विभक्तामस्ति। सर्वेषां प्रश्नानामुत्तरं संस्कृतभाषायामेव देयम्। अभ्यर्थिभिः पृथक् निर्दिष्ट विशेषसूचनानुसारं खण्डान्तर्गतप्रश्नाः समाधेयाः।

खण्ड: – I

सूचना: - अस्मिन् खण्डे निम्नलिखितं गद्यभागम् आश्रित्य पञ्च (5) प्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य प्रायशः त्रिंशत् (30) शब्दात्मकम् उत्तरं देयम्। एकैकस्य प्रश्नस्य कृते पञ्च अङ्काः सन्ति। (5X5 =25 अङ्काः)

अस्ति मगधदेशे चम्पकवती नामारण्यानी। तस्यां चिरान्महता स्नेहेन मृगकाकौ निवसतः। स च मृगः स्वेच्छया भ्रम्यन्हृष्टपुष्टाङ्गः केनचिच्छृगालेनावलोकितः। तं दृष्ट्वा शृगालोऽचिन्तयत्- ‘आः कथमेतन्मांसं सुललितं भक्षयामि? भवतु विश्वासं तावदुत्पादयामि।’ इत्यालोच्योपसृत्याब्रवीत्- ‘मित्र! कुशलं ते?’ मृगेणोक्तम्- ‘कस्त्वम्?’ स ब्रूते- ‘क्षुद्रबुद्धिनामा जम्बूकोऽहम्। अत्रारण्ये बन्धुहीनो मृतवन्निवसामि। इदानीं त्वां मित्रमासाद्य पुनः सबन्धुर्जीवलोकं प्रविष्टोऽस्मि। अधुना तवानुचरेण मया सर्वथा भवितव्यम्’। मृगेणोक्तम्- ‘एवमस्तु’। ततः पश्चादस्तङ्गते सवितरि भगवति मरीचिमालिनि तौ मृगस्य वासभूमिं गतौ। तत्र चम्पकवृक्षशाखायां सृबुद्धिनामा काको मृगस्य चिरमित्रं निवसति। तौ दृष्ट्वा काकोऽवदत्- ‘सखे चित्राङ्ग! कोऽयं द्वितीयः?’ मृगो ब्रूते- ‘जम्बूकोऽयम्। अस्मत्सख्यमिच्छन्नागतः।’ काको ब्रूते- ‘मित्र! अकस्मादागन्तुना सह मैत्री न युक्ता।’

तथा चोक्तम्-

अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित् । इति।

1. मृगकाकौ कुत्र निवसतः? मृगः केन अवलोकितः ?

खण्ड: – II

सूचना :- अस्मिन् खण्डे पञ्चाङ्कपरिमिताः पञ्चदशप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य प्रायशः
त्रिंशत् (30) शब्दात्मकम् उत्तरं देयम्। (5X15 = 75 अङ्काः)

6. हिरण्यगर्भसूक्तस्य दार्शनिकतत्त्वं स्वकीयया गिरा स्फुटीकुरुत।

7. व्याख्यायतामयं मन्त्रः- अन्धं तमः प्राविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः।

8. वेदाङ्गानां नामानि उल्लिख्य एकस्य वेदाङ्गत्वं साधयत।

11. अर्थपरिवर्तनकारणानि सोदाहरणम् उल्लिखत।

12. 'शक्तस्य शक्यकारणात्' इत्यंशो व्यख्यायताम्।

13. विवर्तः सोदाहरणः स्पष्टीक्रियताम्।

14. 'रम्या रामायणी कथा' इति सूक्तेः तात्पर्यं प्रकाशयत।

15. महाभारतस्य रचनाक्रमं प्रदर्शयत।

16. अर्थशास्त्रमनुसृत्य सन्धिविग्रहादिषड्गुणानां स्वरूपं लिखत।

17. मन्दः कवियशःप्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्। प्रांशुलभ्यफले लोभादुद्बाहुरिव वामनः।। इत्यस्य व्यख्या कार्या।

18. 'उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते' इति सूक्तेः तात्पर्यं प्रकाशयत।

19. 'इति हेतुर्न तु हेतवः' इत्यस्य व्याख्या कार्या।

20. न्यायवैशेषिकदिशा प्रमाणस्य निर्वचनात्मिकां परिभाषां विलिख्य तन्नामानि लेखनीयानि।

खण्ड: – III

- सूचना:- अस्मिन् खण्डे एकैकस्मिन् ऐच्छिकविषये पञ्च पञ्च प्रश्नाः सन्ति। एकम् ऐच्छिकं विषयं चित्वा अभ्यर्थिना तस्य पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः। एकैकस्य प्रश्नस्य द्वादश (12) अङ्काः सन्ति, उत्तरं तावत् प्रायशः द्विशत (200) शब्दात्मकं लेखनीयम्।
(12x5=60अङ्काः)

ऐच्छिकः – I

21. भवदधीते सूर्यसूक्ते सूर्यस्य चारित्रिकं वैशिष्ट्यं यथा वर्णितं तथा स्वकीयया गिरा प्रतिपादयत।
22. अथर्ववेदोक्तं कालसूक्तमाश्रित्य कालस्य महत्त्वं वैशद्येन समुपवर्णयत।
23. ब्राह्मणानां प्रतिपाद्यविषयान् संक्षेपेण आलोचयत।
24. अधोनिर्दिष्टा विषयाः सोदाहरणं व्यख्यातः-
समानाक्षरसंज्ञा, अधोषसंज्ञा, स्वरभक्तिः, संयोगसंज्ञा
25. 'तास्त्रिविधा ऋचः' - सोपष्टम्भं यास्कपङ्क्तिरियं व्याख्यायताम्।

ऐच्छिकः – II

21. समासप्रक्रियां लिखत -
भूतबलिः, उपकृष्णम्, कण्ठेकालः, पितरौ
22. ससूत्रं परस्मैपदं साधयत -
पराकरोति, अभिक्षिपति, प्रवहति, कम्पयति
23. ससूत्रम् आत्मनेपदं साधयत -
कारयते, ओदनं भुङ्क्ते, संक्रीडते, विजयते

24. शब्दब्रह्मणः स्वरूपं, ध्वनेः द्वैविध्यं च विशदयत।
25. व्याख्यात -
गोस्त्रियोरूपसर्जनस्य, चार्थे द्वन्द्वः, कुगतिप्रादयः, अनेकमन्यपदार्थे

ऐच्छिकः— III

21. पातञ्जलयोगदिशा कैवल्यस्वरूपं विविच्यताम्।
22. शारीरकभाष्यमधिकृत्य अध्यासविषयकं मीमांसामतं समीक्ष्यताम्।
23. अनुमितेः करणमधिकृत्य प्राचीननव्यमतयोः समीक्षा क्रियताम्।
24. जैनसम्मतः स्याद्वादो निरूप्यताम्।
25. 'सर्वं क्षणिकं क्षणिकम्' इति सौगतमतं प्रतिपाद्यताम्।

ऐच्छिकः— IV

21. लक्षणायाः लक्षणं प्रतिपाद्य तद्भेदान् प्रदर्शयत।
22. गुणीभूतव्यङ्ग्यभेदान् प्रदर्श्य केषाञ्चित् त्रयाणां सोदाहरणं प्रतिपादनं कुरुत।

23. कुन्तकदिशा काव्यप्रयोजनं प्रतिपादयत।

24. राजशेखरानुसारं काव्यपुरुषस्वरूपं वर्णयत।

25. पण्डितराजजगन्नाथदिशा काव्यकारणं लिखत।

ऐच्छिकः – V

21. भारते लेखनकलायाः तथा लेख-नसामग्रयाश्च प्राचीनतां विशदीकुरुत

22. मन्दसौरशिलालेखस्य साहित्यिकं महत्त्वं स्पष्टयत।

23. अशोककालीनशिलालेखानां परिचयो देयः।

24. रुद्रदामगिरनारशिलालेखस्य महत्त्वं प्रतिपादयत।

25. स्कन्दगुप्तस्य गिरनारशिलालेखस्य ऐतिहासिकं महत्त्वं स्पष्टयत।

Lined writing area consisting of 24 horizontal lines.

Lined writing area consisting of approximately 28 horizontal lines for student responses.

खण्डः – IV

सूचनाः-- अस्मिन् खण्डे चत्वारिंशत् (40) अङ्कपरिमितः निबन्धात्मकप्रश्नः अस्ति। अधो निर्दिष्टविषयेषु एकमाश्रित्य प्रायशः (1000) सहस्रशब्दपरिमितम् उत्तरं देयम्।

(40X1= 40 अङ्काः)

26. ऐच्छिक - I

वैदिकवाङ्मये मानवाधिकारविषयिणी भावना।

अथवा

वैदिकमन्त्रेषु प्रकृतिपूजनम्

ऐच्छिक - II

वृत्तिविग्रहयोः स्वरूपं प्रदर्श्य ससूत्रं समासभेदान् विशदयत।

अथवा

‘स्फोटवादिनः वैयाकरणाः’ -- विवेचयत।

ऐच्छिक - III

अष्टाङ्गयोगनिरूपणम्

अथवा

न्यायवैशेषिकसम्मतं व्याप्तिस्वरूपम्

ऐच्छिक - IV

‘विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः’ इति रससूत्रमाधारीकृत्य समीक्षात्मको निबन्धो लेख्यः।

अथवा

काव्यलक्षणविषयकसिद्धान्तान् विमृशत।

ऐच्छिक - V

खारवेलहाथीगुम्फाभिलेरवस्य वैशिष्ट्यं प्रतिपादयत।

अथवा

ब्राह्मीलिपे: उत्पत्तिविषयकसिद्धान्तं स्पष्टयत।

Lined writing area with horizontal lines.

FOR OFFICE USE ONLY							
Marks Obtained							
Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained
1		26		51		76	
2		27		52		77	
3		28		53		78	
4		29		54		79	
5		30		55		80	
6		31		56		81	
7		32		57		82	
8		33		58		83	
9		34		59		84	
10		35		60		85	
11		36		61		86	
12		37		62		87	
13		38		63		88	
14		39		64		89	
15		40		65		90	
16		41		66		91	
17		42		67		92	
18		43		68		93	
19		44		69		94	
20		45		70		95	
21		46		71		96	
22		47		72		97	
23		48		73		98	
24		49		74		99	
25		50		75		100	

Total Marks Obtained (in words)

(in figures)

Signature & Name of the Coordinator

(Evaluation) Date